Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 7.671
January to March 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLV

मेवाड़ के वीर पिता का वीर पुत्र महाराणा अमर सिंह प्रथम

खुशबु झाला*

* छात्रा (इतिहास) मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.) भारत

शोध सारांश – उक्त लेख में राजस्थान के मेवाड़ अंचल के बैकुंठ महाराणा अमर सिंह प्रथम के जीवन की क्रमिक घटनाओं को प्रकाश में लाने का प्रयास किया गया है। महाराणा अमर सिंह, महाराणा प्रताप के सबसे बड़े पुत्र एवं मेवाड़ राज्य के उत्तराधिकारी थे। उन्होंने 19 जनवरी 1597 से 26 जनवरी 1620 तक मेवाड़ राज्य पर शासन किया। अपने राज्याभिषेक से पूर्व एवं पश्चात उन्होंने मुगलों के खिलाफ कई लड़ाइयां लड़ी और अंत में परिस्थितियों से विवश होकर, निरंतर मुगल आक्रमणों द्वारा प्रजा व सरदारों की दयनीय स्थिति देख व मेवाड़ की कमजोर आर्थिक स्थिति, संसाधनों की कमी आदि ध्यान में रख प्रजा हित को स्वाभिमान से ऊपर रख 1615 में मुगल सम्राट जहांगीर से संधि की जिसे मेवाड़ मुगल संधि कहा जाता है। इस संधि के पश्चात शताब्दी से चले आ रहे हैं दीर्घकालिक संघर्ष का अंत हुआ। परंतु इस संधि के बाद महाराणा अमर सिंह का जीवन आत्मग्लानि में डूब गया तथा उन्होंने राजकार्य अपने ज्येष्ठ पुत्र कुंवर कर्ण सिंह को सौंप कर अपना जीवन एकलिंग नाथ की आराधना करते हुए एकांतवास में व्यतीत किया।
शब्द कुंजी – प्रकाश, आक्रमण, संधि, हित, स्वाभिमान।

छायाचित्र – 01

प्रस्तावना – महाराणा अमर सिंह का जन्म 16 मार्च 1559 को महाराणा प्रताप की रानी अजबदे पंवार के गर्भ से चित्तौड़गढ़ दुर्ग में हुआ। उस समय मेवाड़ के महाराणा उदय सिंह थे जो प्रताप के पिता व अमर सिंह के दाता हुकुम थे। अमरसिंह के जन्म से प्रसन्न होकर उदय सिंह अपने परिवार के साथ एकलिंग नाथ के दर्शन करने पहुंचे। गिरवा में प्रवेश कर महाराणा ने आहड़ नगर में पड़ाव डाला व एकलिंग नाथ के दर्शन किए तथा इस शुभ अवसर पर ही मेवाड़ की नई राजधानी बेड़च नदी के किनारे उदयपुर नगर की स्थापना की एवं उदयपुर के क्रमिक विकास के साथ ही प्रताप व उनकी मृत्यु के पश्चात अमर सिंह प्रथम ने यहां से मेवाड़ का राज कार्य संभाला।

युवराज के रूप में अमर सिंह –अमर सिंह को बचपन में प्रेम से 'अमरा' कह कर पुकारा जाता था।अमर सिंह ने अल्पायु में ही अपने पिता के साथ पहाड़ों में रहते हुए शस्त्र विद्या, गुरिल्ला युद्ध (छापामार) पद्धति आदि कौशल आत्मसात कर लिए जिसका कुशल प्रयोग अमर सिंह द्वारा निरंतर मुगलों द्वारा किए 17 आक्रमणों में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के रूप में किया गया।

दिवेर का युद्ध – महाराणा प्रताप द्वारा मुगलों को कुंभलगढ़ युद्ध का प्रत्युत्तर देने हेतु – 1582 दशहरे के दिन राणा की सेना दिवेर के शाही मोर्चे पर आक्रमण कर देती है जिसका थानाधिकारी सुल्तान खान नामक मुगल था। राजपूत व मुगलों की सेना में युद्ध होता है तथा महाराणा की सेना विजय होती है व मुगल पराजित होते हैं।

छायाचित्र –02

अमरकाव्यम व राज प्रशस्ति के अनुसार कुंवर अमर सिंह सुल्तान खान नामक मुगल सेनापति पर भाले से प्रहार करते हैं तथा एक ही प्रहार में भाले को सुल्तान खान सहित घोड़े के आर–पार निकाल देते हैं। युद्ध समाप्त होता है तथा प्रताप युद्ध भूमि में घायलों का जायजा ले रहे थे तो वह गंभीर रूप से घायल सुल्तान खान के निकट जाकर उसकी आखिरी इच्छा पूछते हैं व घायल सुल्तान खान भाला मारने वाले युवक को देखने की इच्छा प्रकट करता है किंतु अमर सिंह उस समय मोर्चे से दूर थे व सुल्तान खान की बिगड़ती परिस्थिति देख महाराणा निकट खड़े सैनिक का परिचय भाला मारने वाले युवक के रूप में कराते हैं। सुल्तान खान हाव भाव से स्पष्ट करता है कि उसने प्रहार करने वाले युवक की आंखों को देखा था अत: वास्तविक युवक

को लाया जाए जिसने मुझ सुल्तान खान पर इतनी वीरता से प्रहार किया। अत: तत्काल अमर सिंह को बुलवाया गया तथा प्रताप ने अमर सिंह का परिचय सुल्तान खान से कराया। अमर सिंह को देखते ही खान के चेहरे पर प्रसन्नता के भाव आए तथा उसने कहा तुम सच में योग्य पिता के योग्य पुत्र हो। सुल्तान खान ने जल मांगा तुरंत गंगाजल का प्रबंध किया गया किंतु सुल्तान खान भयंकर घायल होने के बाद भी मृत्य को प्राप्त नहीं हो पा रहा था। अत: प्रताप ने अमर सिंह को भाला शरीर से निकालने कहा किंतु भाला नहीं निकला तब अमर सिंह ने सुल्तान खान के दोनों पैरों पर खड़े होकर दोनों हाथों से भाला खींचते हैं तब भाला निकलता है और सुल्तान खान की मृत्यु हो जाती है।

छायाचित्र -03

दिवेर का युद्ध जिसे टॉड ने 'मेवाड़ का मैराथन' की संज्ञा दी है, अमर सिंह की अप्रतिम वीरता का युद्ध है किंतु इतिहास की विडंबना देखिए हल्दीघाटी के बारे में लिखने में हम इस तरह खो गए कि हम दिवेर भूल गए। यदि दिवेर लिखा जाता है तो इससे साबित होता है कि इसमें प्रताप की विजय हुई, इस युद्ध में सेनापति अमर सिंह थे जिन्होंने अपने अपूर्व शौर्य व वीरता का परिचय दिया जिसकी वजह से इस युद्ध में मुगलों की पराजय हुई।

शेरपुर मोर्चे पर आक्रमण (1580) – अब्दुर्रहीम खानखाना को अजमेर का सूबेदार नियुक्त किया गया तथा खानखाना मेवाड़ अभियान हेतु शेरपुर पहुंचे। जब तक शेष मुगल सेना खानखाना से आकर मिलती उससे पूर्व ही कुंवर अमर सिंह ने शेरपुर मोर्चे पर आक्रमण कर खानखाना के परिवार को बंदी बना लिया जिसमें स्त्रियां भी शामिल थी किंतु जब महाराणा प्रताप को मूल घटना की जानकारी हुई उन्होंने अमर सिंह को अपनी भूल समझाई व अमर सिंह ने महिलाओं से क्षमा मांगी। महाराणा ने महिलाओं से कहा आप सभी मेरी बहन बेटी के समान है तथा मेरे पुत्र से भूल हुई, पुन: इसे नहीं दोहराया जायेगा। महिलाओं को ससम्मान खानखाना के मोर्चे पर पहुंचाया गया अमर सिंह द्वारा खानखाना को पत्र लिखा गया व खानखाना से क्षमा मांगी गयी। यह घटना खानखाना हेतु अविस्मरणीय थी तथा उस दिन से खानखाना मेवाड़ की स्वतंत्रता के पक्षधर हुए व कुंवर अमर सिंह के मित्र बने। मित्रता के इसी क्रम में आगे महाराणा अमर सिंह मेवाड़ की दयनीय स्थिति में खानखाना से मार्गदर्शन करने को कहते हैं।

अमर सिंह का राज्याभिषेक – 19 जनवरी 1597 को कुंवर अमर सिंह प्रथम का राज्याभिषेक चावंड में हुआ 19 जनवरी 1597 से 26 जनवरी 1620 तक महाराणा अमर सिंह ने मेवाड़ पर शासन किया। महाराणा अमर सिंह के राज्याभिषेक के 2 वर्ष पश्चात ही निरंतर मुगल आक्रमणों का दौर शुरू हो गया।

महाराणा द्वारा कार्य

1. सैन्य व्यवस्था संचालन हेतु विभाग संचालक हरिदास झाला।
2. लोगों को कर माफी जमीन देखकर आर्थिक सहायता।
3. गोविन्दलाल श्रीमाली लिखते है महाराणा अमर सिंह के रायपुरिया ताम्रपत्र से विक्रम संवत 1656 ज्येष्ठ सुदी को दुरसा आढा व उनके पुत्रों को गोडवाल गांव का दान।
4. गोविन्दलाल श्रीमाली लिखते है जैन अभिलेख – 14 अगस्त 1602 ई पाली से राणा अमर सिंह द्वार मेहता नारायण को जिनके पूर्वज सिवाना की लड़ाई में मारे गए थे कृपा पूर्वक गांव दान किया गया व महावीर की पूजा हेतु एक अरहठ भी उपहार किया।

महाराणा अमर सिंह के समय मुगल अभियान

1599 सलीम का अभियान–मुगल सम्राट अकबर द्वारा शहजादे सलीम को मेवाड़ अभियान पर भेजा गया व अबुल फजल के अनुसार मेवाड़ी सेना छापामार युद्ध करती हैं जो पहाड़ों से निकल आक्रमण कर पुन: पहाड़ों में लौट जाती किंतु मुगल सेना मेवाड़ के भौगोलिक परिवेश से परिचित न होने के कारण हार का सामना करती है तथा परेशान हो वापस लौट जाती है।

1603 पुन: सलीम का अभियान –पुन: सलीम को अभियान पर भेजा जाता है इस बार शहजादा सम्राट के विरुद्ध विद्रोही मानसिकता के कारण फतेहपुर सीकरी से आगे नहीं बढ़ता है व अकबर शहजादे को पुन: इलाहबाद लौटने का आदेश देता है तथा अभियान असफल हो जाता है।

1605 परवेज का अभियान –इस समय तक अकबर की मृत्यु हो जाती है व शहजादा सलीम जहांगीर नाम से मुगल सम्राट बनता है। अपने पिता अकबर के समय वह मेवाड़ अभियान को टालता रहा, किंतु शासक बनने के बाद उसने अपनी संपूर्ण शक्ति व संसाधनों को मेवाड़ को अधिकार में लाने में लगा दिया। जहांगीर ने अपने दूसरे पुत्र परवेज को 1605 में 20000 अश्वारोहियों वाली सेना के साथ मेवाड़ पर अधिकार हेतु भेजा। इसके साथ ही स्पष्ट निर्देश दिया कि यदि महाराणा व उनके पुत्र संधि करना स्वीकार करें तो उनके मुल्क को नष्ट मत करना।

कविराजा श्यामलदास के अनुसार महाराणा अमर सिंह को मुगल आक्रमण की सूचना मिलते ही उन्होंने स्वभूमि विध्वंस की नीति अपनाई व खेतों को उजाड़ दिया ताकि मुगलों को खाद्य सामग्री उपलब्ध न हो। जब परवेज ऊंटाला आधुनिक वल्लभनगर की ओर बढ़ रहा था तो मेवाड़ की सेवा ने आक्रमण कर मुगल सेना को क्षति पहुंचाई। मुगल सेना पराजित हुई व सेना को वापस बुला लिया गया।

1608 महावत खान का अभियान – महावत खान को 80 तोपे देकर महाराणा को परास्त करने हेतु भेजा गया। खान की सेना ने मेवाड़ में कई स्थानों पर चौकिया स्थापित की और मेवाड़ पर आक्रमण की योजना बना ही रहे थे इसी मध्य मेघ सिंह नामक योद्धा ने पहाड़ों से निकल 500 राजपूत साथियों के साथ रात्रि में मुगल सेना पर आक्रमण कर दिया। मुगल सेना को बड़ी क्षति हुई तथा महावत खान जैसे सेनापति को अपनी जान बचा सेना के साथ भागना पड़ा।

1609 अब्दुल्ला खान का अभियान – मुगलों ने अपने प्रयास नए सिरे से शुरू किए व अब्दुल्ला खान के नेतृत्व में अभियान भेजा। किंतु इसमें भी मुगल सेना को कोई सफलता नहीं मिली पहाड़ी इलाकों में जब अवसर मिले राजपूत सैनिक टुकड़ियों ने मुगल मोर्चे पर आक्रमण किया व महाराणा अमर सिंह ने अपना वर्चस्व कायम रखा। जहांगीर को खान को वापस बुलाने पर मजबूर होना पड़ा।

1612 राजा बसु का अभियान–अब राजा बसु के मनसब में वृद्धि कर उन्हें मेवाड़ पर अधिकार हेतु भेजा गया। किंतु ऐसा प्रतीत होता है कि बसु को मेवाड़ में असफलता का ही सामना करना पड़ा क्योंकि समकालीन फारसी इतिहास एवं तुजुक-ए-जहांगीरी में उनके युद्धों का कोई इतिहास नहीं मिलता।

1613 मिर्जा अजीज कोका का अभियान –पुन: मिर्जा अजीज कोका को भेजा गया पर इस बार भी इतिहास की पुनरावृत्ति ही हुई और कोका को सफलता नहीं मिली।

1615 खुर्रम का अभियान–मेवाड़ में निरंतर मुगल अभियान की असफलता को देख जहांगीर ने अपने पुत्र खुर्रम के नेतृत्व में विशाल सेना मेवाड़ पर आक्रमण हेतु भेजी। गोपीनाथ शर्मा के शब्दों में खुर्रम ने मेवाड़ को पूरी तरह घेरने की योजना बना महाराणा अमर सिंह को चावंड के पहाड़ों में घेर लिया तथा उन मुगल स्थान पर पुन: अधिकार कर लिया जो पिछले अभियानों में मुगलों के हाथ से निकल गए थे। राजपूतो ने भी बड़े साहस से स्थिति का मुकाबला किया किंतु निरंतर दीर्घकालिक संघर्ष के कारण मेवाड़ की आर्थिक व प्रशासनिक व्यवस्थाएं ध्वस्त हो गई स्वभूमि विध्वंस की नीति जो मुगलो के विरुद्ध थी उससे अब मेवाड़ की प्रजा की आर्थिक स्थिति बिगड़ गई तथा महाराणा की प्रजा सरदार सेना आदि शांति की मांग करने लगे।

अपनों की बिगड़ी स्थिति ने महाराणा अमर सिंह को धर्म संकट में डाल दिया तथा महाराणा ने अपने पुराने मित्र अब्दुर्रहीम खानखाना से मार्गदर्शन चाहा। कविराजा श्यामलदास दास के अनुसार खानखाना ने जवाब इस प्रकार दिया।

धररहसी रहसी धरम, खप जासी खुरसान।
अमर विश्वंभर ऊपरा, राखो निहचो राणा।।

अर्थ – जमीन और ईमान रहेगा और खुरासानी लोग अर्थात मुगल नष्ट हो जाएंगेO ऐ राणा अमर सिंह! आप इस दुनिया के पालने वाले पर भरोसा रखें अर्थात हीनता के आराम से इज्जत की तकलीफ अच्छी है।

परिस्थितियां – कवि राजा श्यामल दास लिखते हैं कि खानखाना के संदेश के बाद कुछ लड़ाइयां और लड़ी गई पर अब राजपूती सरदारों ने मिलकर महाराणा अमर सिंह के पुत्र कुंवर करण सिंह से सलाह मांगी कि अब क्या करना चाहिए सरदारों ने कहा एक एक घराने की चार-चार पीढ़ियां शहीद हो गई, खाद्यान्न कमी के कारण गुलर के फल खाकर दिन काटने पड़ रहे हैं, मेवाड़ी राजपूतो के बाल बच्चे व स्त्रियां युद्ध के बाद मुगल सैनिकों के हाथों में पढ़ने से शोषित होते हैं मेवाड़ किसी भी परिस्थिति में और आक्रमण सहने को तैयार नहीं है अत: कुंवर कर्ण सिंह को महाराणा अमर सिंह के समक्ष शांति संधि का विचार रखने को कहा गया इस पर कुंवर कर्ण सिंह ने उत्तार दिया मैं आप लोगों एवम् मेवाड़ की स्थिति से परिचित हूं किंतु दाजीराज अर्थात् महाराणा प्रताप के ताने को जो उन्होंने बादशाह के अधीनस्थ बनने के विषय में अमर सिंह को युवराज काल में दिया था याद कर कदापि संधि नहीं चाहेंगे। सरदारों के पुन: अर्ज करने पर कुंवर कर्ण सिंह ने सुझाव दिया कि महाराणा को सूचित किए बिना ही संधि प्रस्ताव मुगल खेमे में भिजवा दिया जाए क्योंकि कर्ण सिंह नहीं चाहते थे कि महाराणा के संधि प्रस्ताव न रखने पर मेवाड़ के सरदार बगावत न कर दे तुरंत प्रभाव से संधि प्रस्ताव खुर्रम के मोर्चे पर भिजवाया गया और मुगल शहजादे ने सम्राट के पूर्व निर्देशानुसार संधि प्रस्ताव स्वीकार कर लिया।

संधि प्रस्ताव की सूचना महाराणा को कवि राजा श्यामल दास के अनुसार कुंवर कर्ण सिंह ने सरदारों संग महाराणा समक्ष उपस्थित होकर महाराणा को परिस्थितियों से अवगत करा संधि प्रस्ताव संबंधित हाल अर्ज किया। इसे सुनने के पश्चात महाराणा शांत रहे किंतु उनके चेहरे पर उदासी छा गई कुछ समय पश्चात महाराणा ने उत्तार दिया दाजीराज का ताना सहन करने का इरादा मेरा नहीं था किंतु ईश्वर ने आंख से दिखाया। अब जब सभी सरदारों व प्रजा की यही मर्जी है तो मुझे यह सहना पड़ेगा। महाराणा द्वारा कहे उक्त शब्दों से महाराणा की स्थिति की समझ व प्रजा हित की भावना की झलक दिखती है इस तरह निराशा के बाद पेशवाई कर शाही फरमान मान लिया गया।

मेवाड़ मुगल संधि शर्तें:

1. स्वयं महाराणा खुर्रम से मुलाकात करेंगे और कुंवर कर्ण सिंह मुगल दरबार में उपस्थित होंगे।
2. महाराणा को अन्य राजाओं की तरह मुगल दरबार की सेवा श्रेणी में शामिल होना होगा परंतु राणा को दरबार में उपस्थित होना आवश्यक नहीं होगा।
3. 1500 घुड़सवारों की टुकड़ी मुगल सेवा में सम्मिलित होगी।
4. कुंवर कर्ण सिंह को 5000 जात व 5000 सवार का मनसब प्रदान किया जाएगा।
5. चित्तौड़ लौटा दिया जाएगा परंतु किले की मरम्मत नहीं करवाई जा सकती।

कविराजा श्यामलदास के अनुसार उक्त संधि में मेवाड़ की और से हरिदास झाला व शुभकरण को संधि वार्ता हेतु भेजा गया था। खुर्रम द्वारा इनका स्वागत किया गया व मुगल अधिकारियो शुक्रल्लाहएवं सुन्दरदास के संघ जहांगीर के समक्ष अजमेर भेजा गया।

इस संधि द्वारा वर्षों से चल रहे दीर्घकालिक संघर्ष का अंत हुआ अपनी क्षमता से कई गुना बड़ी संसाधनों से युक्त मुगल सेना से मुकाबला करना आसान नहीं था शक्तिशाली मुगलों के सामने अपने सीमित संसाधनों व सीमित सेना के साथ अरावली पर्वतमालाओं के बीच उन्होंने बार-बार उत्कृष्ट प्रदर्शन किया जब वर्षों के बाद उनके सभी संसाधन समाप्त हो गए तो उन्हें सरदारों की जिद व प्रजा की स्थिति के कारण शांति संधि करनी पड़ी यह संधि एक तरफा कभी नहीं थी क्योंकि मुगलों ने भी संधि के लिए पहल की थी व मुगल स्वयं दीर्घकाल से चले आ रहे संघर्ष का अंत चाहते थे।

महाराणा अमर सिंह का आखिरी समय –बिना मन से की गई मेवाड़ मुगल संधि के बाद महाराणा अमर सिंह का मन विचलित रहने लगा। उन्हें महाराणा प्रताप द्वारा अमर सिंह के युवराज काल में कहा ताना याद कर आत्मग्लानि होने लगी। कविराजा श्यामल दास लिखते हैं कि - अपने युवराज काल के दौरान जब अमर सिंह अपने पिता महाराणा प्रताप के साथ पहाड़ पर झोपड़ी में निवास कर रहे थे। इस दौरान रात्रि में वर्षा के कारण वर्षा का पानी झोपड़ी में गिरने लगा तब मेवाड़ की कुंवरानी ने अमर सिंह से कहा हम इस दुख से कभी पार उतरेंगे या नहीं? कुंवर अमर सिंह ने जवाब दिया कि हम क्या करें दाजीराज के विरुद्ध कुछ नहीं कर सकते। प्रताप निकट की झोपड़ी में विश्राम कर रहे थे, उन्होंने कुंवर कुंवरानी की बातें सुनी व सवेरे सभी सरदारों को इकट्ठा कर कहा है सरदार लोगों में अच्छी तरह जानता हूं कि मेरे बाद में कुंवर अमर सिंह जो दिल से आराम चाहता है कभी तकलीफ नहीं उठायेगा और मुसलमान बादशाहों की खिल्लत पहनेगा। हमारे बेदाग वंश को अपने आराम के लिए दाग लगवायेगा। यह बात कुंवर के दिल पर

लगी वह बहुत लज्जित हुए लेकिन अपने पिता के सामने कुछ कह नहीं सके व निश्चय किया कि वह कभी बादशाह के आज्ञाकारी नहीं बनेंगे किंतु परिस्थितियों कुछ ऐसी बनी कि उन्हें प्रजा हित को स्वाभिमान व इच्छा से ऊपर रखना पड़ा।

एकांतवास – संधि के बाद राणा अमर सिंह ने अपनी सत्ता अपने पुत्र कुंवरकर्ण सिंह को सौंप कर स्वयं एकलिंग नाथ की अराधना करते हुए अगले 5 वर्ष महासतिया आहड़ के किनारे एकांत जीवन व्यतीत किया। जहां 26 जनवरी 1620 को महाराणा अमर सिंह का देहावसान हो गया। जहां इनका प्रथम स्मारक बना है।

अमर सिंह का व्यक्तित्व–गोपीनाथ शर्मा की पुस्तक में लिखा है कि – डॉ. ओझा लिखते हैं अमर सिंह वीर पिता का वीर पुत्र था। उपयुक्त लेख का शीर्षक डॉ. ओझा के विचारों से ही प्रेरित हैं, कर्नल जेम्स टॉड लिखते हैं सभी वक्तव्य राणा अमर जैसे चरित्र पर बहुत ही कम है, उनके पास एक नायक के सभी शारीरिक गुणों के साथ मानसिक गुण भी थे। वह मेवाड़ के सभी राजकुमारों में सबसे लंबे एवम् मजबूत थे वह अपने वंश के अन्य महाराणा की तरह अति सुंदर नहीं थे, उसके उलट वे सांवले रूपशाली थे। वह इतने वैधानिक थे कि जब सामंतों ने संधि का प्रस्ताव रखा तो उसको स्वीकृति दी। उन्होंने अपने व्यक्तिगत अपमान को स्वीकार किया व राज्यहित को प्राथमिकता दी। उदारता, पराक्रम, न्याय व दयालुता के कारण अपनी प्रजा के प्रिय थे।

निष्कर्ष – महाराणा अमर सिंह ने अपने जीवन में मुगलों के विरुद्ध 17 युद्ध लड़े एवं सभी में विजय प्राप्त की व मुगलों को तमाम युद्ध में पराजित किया। अत: यह बिना किसी शंका के कहा जा सकता है कि अमर सिंह मेवाड़ के इतिहास में महान वीर योद्धा है किंतु महाराणा प्रताप का व्यक्तित्व इतना विराट हो गया की अमर सिंह छुप गया। इसलिए अमर सिंह का व्यक्तित्व उतना उजागर नहीं हो पाया जितना होना चाहिए था। अमर सिंह के बारे में उतना नहीं लिखा गया जितना लिखा जा सकता है या लिखा जाना चाहिए। अमर सिंह की अतुलनीय प्रतिभा देखने को मिलती है चाहे वह दिवेर का युद्ध हो या मांडलगढ़, उनमें एक वीर योद्धा के साथ ही संधि के दौरान सरदारों व प्रजा के प्रति उदारता व न्याय के भाव भी मौजूद थे। जो की राजतंत्रीय शासन के दौर प्रजाकल्याण को सर्वोपरि रखने का एक अनुपम उदहारण है। यह कहा जा सकता है कि मेवाड़ का इतिहास अमर सिंह की शौर्य गाथा उनके द्वारा लड़े गए युद्धों एवम् अनगिनत लड़ाइयों के बिना अधूरा है। इतिहासकार भले ही अपने लेखन में महाराणा अमर सिंह को वह स्थान देने में पुर्णरूपेण सफल नहीं हो पाए हो परन्तु मेवाड़ के इतिहास में महाराणा के शौर्य, बलिदान एवं समर्पण की छाप अमिट रहेगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. शर्मा, गोपीनाथ, 'राजस्थान इतिहास के स्त्रोत पुरातत्व भाग प्रथम'(1671),पृष्ठ. स.335–342
2. दधवाडीया, श्यामलदास, 'वीर विनोद प्रथम खंड (1986), पृष्ठ.स.432,460–463
3. टॉड, जेम्स, 'एनाल्स एंड एंटिक्विटीज ऑफ राजस्थान भाग 1'(1997), पृष्ठ.स.276–278
4. शर्मा, नारायणलाल, 'महाराणा उदय सिंह (2009), पृष्ठ.स. 276, 278
5. श्रीमाली, गोविंदलाल, 'राजस्थान के अभिलेख भाग 2' पृष्ठ.स. 358–359
6. गुप्ता, कृष्णस्वरूप, 'मेवाड़ इतिहास के अविस्मरणीय प्रसंग'(2021), पृष्ठ.स.93,94
7. गुप्ता, के, एस, और औझा, जे, के, 'राजस्थान का इतिहास एक सर्वेक्षण आरंभिक काल से 1956 ई. तक'(2019), पृष्ठ.स.149–152
8. चन्द्र, सतीश, 'मध्यकालीन भारत सल्तनत से मुगल काल तक' (2019), पृष्ट.स.120
9. 'अमरकाव्यम सर्ग' पृष्ठ.स.17,75
10. 'राजप्रशस्ती सर्ग', पृष्ठ.स.38–39
11. 'अकबरनामा' भाग 3
12. 'तुजुक – ए – जहांगीरी'

वेबसाइट:–

1. https://www.thejaipurdialogues.com/itihasa/maharana-amar-singh-forgotten-son-of-mewar/#google_vignette
2. https://udaipurtimes.com/blog/rana-amar-singh-i-today-on-the-four-hundredth-birth/c74416-w2859-cid364976-s10701.htm

छायाचित्र सन्दर्भ:–

1. https://en.wikipedia.org/wiki/Amar_Singh_I.
2. https://www.thejaipurdialogues.com/itihasa/-diverka yuddhe

****